चरित *n.* actio, factum vitae ratio. N. 6.8. 23.2.5. - Intens. चञ्चुर्, चञ्चूर्य् (v. gr. 570.). Mah. 1.7910.: यानैश् चञ्चूर्यन्ते vehiculis invehuntur, *ils vont en voiture*, *cf.* चङ्कुर currus et चल्. (Lat. *curro, currus*, attenuato *a* in *u*, sicut in Intensivo चञ्चुर् et चङ्कुर currus; fortasse etiam *pro-perus* huc pertinet, mutatâ gutturali in labialem; hib. *cara* «a leg or haunch», *carachadh* «moving», *carachd* «motion, movement»; gr. *κύρω, κυρέω*; goth. *fara* proficiscor, nostrum *fahre*, mutatâ gutturali in labialem, sicut in *fidvôr* = चत्वारस् et *fimf* = पञ्चन्; germ. vet. *hor-sc* celer, anglo-sax. et angl. *hor-s, hor-se* equus; lith. *kieláuju* proficiscor, mutato *r* in *l*, sicut in scrto चल्, *kiélias* via, *kielónê* iter.)

c. अति *P. A.* transgredi, peccare. N. 19.; *c. acc. pers. quam peccando offendimus.* Dr. 5.21.: ना 'तिचरे कथञ्चित् पतीन् महार्हान् मनसा 'पि जातु·

c. अनु percurrere. Ram. I. 46.20.: लोकान् अनुचरन्तु; III. 64.50.: ते कीर्तिर् लोकान् अनुचरिष्यति· *Caus.* Man. 9.266.: देशान् चारैः ... अनुचारयेत्·

c. अनु praef. सम् ambulare, migrare. Mah. 1.3606.: पृथिव्याम् अनुसञ्चरन्ति·

c. अभि 1) adire, visitare, frequentare. R. Schl. 34.10.: मागधी ... पूर्वाभिचरिता· 2) offendere. Man. 5.165.: पतिं या ना 'भिचरति मनोवाग्देहसंयता (Schol. व्यभिचरति)·

c. अभि praef. वि *id. sgnf.* 2. Mah. 1.3234.: अब्राह्मणाङ् कर्तुम् इच्छन्ति रौद्रास् ते मां यथा व्यभिचरन्ति नित्यम्·

c. आ 1) adire, frequentare. N. 15.19.: आपदाचरिते नित्यम् वने· 2) facere, agere, peragere, committere. N. 4.7.; विप्रियं त्व् आचरन् मर्त्यो देवानाम्; Ur. 7.15. 86.8. infr. Br. 2.4.

c. आ praef. सम् *id. sgnf.* 2. Man. 10.111.: इमन् धर्मं समाचरेत्; H. 2.29. Bh. 3.9.19.

c. उत् 1) provenire, *praesertim de sono.* Ragh. 9.73.: उच्चचार निनदो ऽम्भसि; 11.73.: राम इत्य् अयं शब्द उच्चरितः· 2) alvum evacuare. Man. 4.49.: उच्चरेत् (Schol. मूत्रपुरीषोत्सर्गङ् कुर्यात्)·

c. उत् praef. वि offendere, laedere, *praesertim adulterio.* Mah. 1.4732.: व्युच्चरन्त्याः पतिन् नार्याः; 4733.: भार्याङ् तथा व्युच्चरतः; *Atm.* 4720.: तासाम् व्युच्चारमाणानाम् ... पतीन्; *v.* चर् praef. अभि, व्यभि·

c. उप ministrare, servire, curare. Ram. I. 9.71.: स्वयम् उपचचारै 'नम्; N. 21.30.: स मोचयित्वा तान् अश्वान् उपचर्यच शास्त्रतः; Sak. 43.11.: यत्नाद् उपचर्यताम्; *c. instr. rei* Ragh. 14.17.: सुग्रीवविभीषणादीन् उपाचरत् कृत्रिमसम्विधाभिः; Mah. 1.769.: न युक्तम् भवता 'हम् अनृतेनो 'पचरितुम्· (*)

c. निस् egredi. Bh. 6.26.: निश्चरति मनः·

c. परि circumgredi. N. 10.17.; *reverentiae causâ.* Ram. III. 47.6.: लक्ष्मणश्चा 'पि रामस्य पादौ परिचरन् वने·

c. प्र 1) progredi, proficisci, ambulare, migrare. Ram. I. 2.42.: रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति· 2) facere, agere, peragere. Man. 10.100.: कर्मभिः प्रचरितैः·

c. वि ambulare, migrare, peragrare. In. 5.50.: षण्डवद् विचरिष्यसि; H. 2.31. 4.32.; Su. 4.24.: आदित्यचरिताँल् लोकान् विचरिष्यसि; Man. 9.20.

c. सम् *id.* Lass. 74.4. infr.: इतस्ततः सञ्चरत्; *Caus.* सञ्चारयामि commovere. Ragh. 6.8.: सञ्चारिते ... धूपे·

2. चर् 10. *P.*: comperire, certiorem fieri, *erfahren.* R. Schl. I. 9.13.: चारयित्वा तु तम् ऋषिम् आश्रमाद् अभिनिर्गतम्· (Huc trahi posset lat. *peritus, com-perio, ex-perior*, mutatâ gutturali in labialem, nisi *perio* compositum est ex *per* et *eo*.)

c. वि secum volvere, perpendere, cogitare, deliberare, considerare, dubitare, haesitare. N. 5.15.: सा विनिश्चित्य बहुधा विचार्यच पुनः पुनः; 19.35.: एवम् विचार्य बहुशस्; Sa. 5.107.: मा विचारय non haesita. -

(*) Notatu dignissimus est supra laudatus locus propter passivam Infinitivi vim sine ullo verbo auxiliari, quo vulgo passiva forma, quae Infinitivo deest, suppletur, in sententiis ut *g'ét'uṅ s'akyatê*.